IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

मुगल सिक्ख सम्बन्ध (1526-1716)

डॉ. अनिल कुमार साकेत
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
शासकीय कला वाणिज्य महाविद्यालय रामपुर नैकिन जिला सीधी (म.प्र)

शोध सारांश

वर्तमान शोध का उद्देश्य मुगल सिक्ख सम्बन्धों की प्रकृति का अध्ययन करना है। ऐसे विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण करना जिन्होंने मुगल सिक्ख सम्बन्धों को प्रभावित किया और जिनके कारण सिक्ख सम्प्रदाय के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिला। यद्यपि अधिकतर इतिहासकार मुगल सिक्ख सम्बन्धो ं को धार्मिक कारणों से प्रभावित मानते है किन्तु केवल एक पहलू की बजाए, मुगल सिक्ख सम्बन्धों का विश्लेषण अन्य पहलूओं विशेष रूप से राजनीतिक आधार पर करने की आवश्यकता है। निःसदेह मुगल सिक्ख सम्बन्धों को तनावपूर्ण बनाने में सिख गुरु घर के विरोधियों, स्थानीय मुगल अधिकारियों तथा पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। किन्तु सिक्ख गुरुओ ं का बढ़ता प्रभाव भी मुगल शासको को अपनी राजनीतिक सत्ता के लिए एक बड़ी चुनौती प्रतीत होने लगा था। अतः यह देखना भी उपयोगी होगा कि क्या सिक्ख सम्प्रदाय धार्मिक से एक राजनीतिक संगठन का रूप धारण कर गया था। मुगल सिक्ख सम्बन्ध– जब 1526 में जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की थी तब सिक्ख सम्प्रदाय का अपना एक अलग अस्तित्व नहीं था। गुरू नानक देव की शिक्षाओ ं का जैसे–जैसे प्रचार–प्रसार होता चला गया सिक्खो की संख्या में भी वृद्धि होती गई और वह अपना अलग अस्तित्व व पहचान बनाने में सफल रहा। सिक्ख धर्म का विकास मुगल शासको की नीतियों से भी प्रभावित रहा था और इनके सम्बन्धों के स्वरूप में परिवर्तन धार्मिक व राजनैतिक कारणों का परिणाम था।